भारत में शिक्षा का भूमण्डलीकरण किस प्रकार गति प्राप्त कर रहा है?

भूमण्डलीकरण क्या है?

वर्तमान भूमण्डलीकरण का वैचारिक आधार बाजार रूढ़िवाद या नव उदारवाद है। अर्थत् वह इस मान्यता को लेकर चलता है कि अर्थव्यवस्था की सभी प्रक्रियाओं का संचालन और नियमन बाजार की शक्तियों पर छोड़ देना चाहिए और राज्य को अर्थव्यवस्था में कम से कम हस्तक्षेप करना चाहिए।

भूमण्डलीकरण का शाब्दिक अर्थ है किसी विचार, क्रिया अथवा वस्तु को पूरे विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित करना। इस प्रक्रिया के लिए हिन्दी में एक दूसरे शब्द -**वैश्वीकरण** का भी प्रयोग किया जाता है। उसके भी शाब्दिक अर्थ यही है-पूरे विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित करना। परनतु वर्तमान सन्दर्भ में इसका अर्थ इससे कुछ भिन्न है और कुछ अधिक व्यापक है। आज से कुछ वर्ष तक इस शब्द का प्रयोग केवल व्यापार के क्षेत्र में किया जाता था। तब भूमण्डलीकरण का अर्थ था संसार के विभिन्न देशों द्वारा एक-दूसरे को अपने क्षेत्रों में व्यापार करने की स्वीकृति देना, एक-दूसरे को अपने क्षेत्रों में उद्योग लगाने, उत्पादन करने और वस्तुओं के क्रय-विक्रय की स्वीकृति देना परन्तु वर्तमान में इसका क्षेत्र अति व्यापक हो गया है।

वर्तमान में यातायात के साधनों और दूर संचार प्रौद्योगिकी के बिकास से संसार के सभी देश एक-दूसरे के अति निकट आ गए हैं और सब एक-दूसरे के विकास से प्रभावित हो रहे हैं। अब प्रायः सभी देश जीवन के प्रत्येक क्षेत्र-सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी आदि में एक-दूसरे से आदान-प्रदान कर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकास करना चाहते हैं। वर्तमान में वैश्वीकरण की प्रकिया अर्थव्यवस्था को

ही एकीकृत नहीं करती, यह संस्कृति एवं प्रौद्योगिकी आदि को भी एकीकृत करती है। नाईट के शब्दों में निम्नलिखित रूप में परिभाषित कर सकते हैं-

भूमण्डलीकरण का अर्थ तकनीकी, वित्त, व्यापार, ज्ञान मूल्यों तथा विचारों के सीमा पार बढ़ते प्रवाह से है।

परन्तु सीमा पार बढ़ते प्रवाह से न तो राष्ट्रों के अन्तर्सम्न्धों का बोध होता है और न आदान-प्रदान का बोध होता है। हमारी दृष्टि से इसे निम्नलिखित रूप में परिभाषित करना चाहिए-

वर्तमान में भूमण्डलीकरण से तात्पर्य संसार के विभिन्न देशों द्वारा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र-सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक एवं तकनीक आदि में अन्तर्सम्बन्ध स्थापित कर एक-दूसरे से इनका आदान-प्रदान करने की प्रक्रिया से है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का भूमण्डलीकरण-

शिक्षा के भूमण्डलीकरण से तात्पर्य केवल संसार के विभिन्न देशों में एक-दूसरे से शैक्षिक विचारों के आदान-प्रदान और एक- दूसरे देश में जाकर शिक्षा प्राप्त करने से ही नहीं होता अपितु एक-दूसरे देश में अपने शैक्षिक संस्थान स्थापित करने से भी होता है। वर्तमान में हमारे देश में ऐसी अनेक शिक्षा संस्थाएं हैं जो विदेशी शिक्षा संस्थाओं (बोर्ड एवं विश्वविद्यालयों) से मान्यता प्राप्त एवं सम्बद्ध हैं, उन्हीं के पाठ्यक्रम चलती हैं, वे ही इनमें पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की परीक्षा लेते हैं और वे ही इन्हें प्रमाणपत्र एवं उपाधियाँ देते हैं और वे प्रमाण पत्र एवं उपधियाँ हमारे देश में मान्य हैं। दूसरी ओर हमारे देश के भी अनेक शिक्षा संस्थाओं (बोर्ड एवं विश्वविद्यालयों) से मान्यता प्राप्त एवं सम्बद्ध शिक्षण संस्थाएँ दूसरे देशों में चल रही हैं और उनके प्रमाण पत्र एवं उपाधिरयाँ वहाँ मान्य हैं। इन्द्रा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) के केनद्र तो अब कई देशों में स्थापित हो गए हैं।

कुछ वर्ष पहले एक तथ्य प्रकाश में आया था कि भारत में कई ऐसे विदेशी विश्वविद्यालयों ने यहाँ अपने शैक्षिक केन्द्र स्थापित कर रखे हैं जिन्हें उनके अपने ही देश में मान्यता प्राप्त नहीं हैं और वे बहाँ छात्र-छात्रां से मोटी धनराशि वसूल कर रहे हैं। तत्कालीन केन्द्रीय मानव संसाधन मन्त्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने इस पर नियन्त्रण करने की बात भी कही थी परन्तु स्थिति यह है कि इन संस्थानों का जाल पूरे भारत में फैलता जा रहा है।

भारतीय सरकार ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 50 प्रतिशत तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति दे दी हैं। इससे विदेशी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों के लिए भारत में सरकारी और मान्यता प्राप्त निजी विश्वविद्यालयों के साथ साझेदारी में अपने परिसर खोलने का मार्ग प्रशस्त हो गया है। इस निर्णय के पीछे सरकार की दलील है कि भारत से प्रतिवर्ष लगभग 1 लाख 30 हजार छात्र-छात्राएँ उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाते हैं और वहाँ के विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेते हैं और वर्तमान में विदेशों में पढ़ने वाले भारतीय छात्र-छात्राओं

को लगभग 4 अरब डॉलर प्रतिवर्ष खर्च करने होते हैं, भारत में उन विश्वविद्यालयों के परिसर स्थापित होने से भारत से विदेश जाने वाले छात्रों की संख्या में भी कमी आएगी और वहाँ इन्हें जो प्रतिवर्ष व्यय करना हाता है उसमें भी कमी आएगी। एक लाभ यह और होगा कि जो छात्र-छात्राएँ किसी कारण विदेशों में जाकर इन विश्वविद्यालयों की शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते, वे अब इनकी शिक्षा भारत में ही प्राप्त कर सकेगें। परन्तु अपने गले यह दलील पूरी तरह नहीं उतरती। आखिर विदेशी विश्वविद्यालयां की उपाधि के प्रति इतना आकर्षण क्यों । क्या हमारे देश के कोई भी विश्वविद्यालय उस स्तर की उच्च शिक्षा की व्यवस्था नंहीं कर सकते। हमें इस बौद्धिक दासता से मुक्त होने की आवश्यकता हैं। परन्तु वर्तमान में यह हमारे देश के लिए अनिवार्य है। अतः इसके गुण-दोषों पर विचार करने के बाद ही इसे सावधानी के साथ स्वीकार करना चाहिए।

स्पष्ट है कि भारत में भूमण्डलीकरण शिक्षा के साथ-साथ उद्योग जगत को भी प्रभावित किया है। भारतीय उद्योग बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से मुकाबला करने के स्थान पर उनक सामने हथियार डाल रहे हैं और उद्योगों को उन्हें बेच रहे हैं। यह प्रक्रिया देश के लिए हानिकारक ही साबित हो रहे हैं। अब तक देश में लगभग 5 लाख इकाइयाँ बन्द हो चुकी है जिनसे 25 लाख व्यक्ति बेरोजगार हो गए हैं।

शिक्षाशास्त्र

महत्वपूर्ण लिंक

- ई-लर्निंग का अर्थ | ई-लर्निंग की प्रकृति एवं विशेषतायें | ई-लर्निंग के विविध रूपों एवं शैलियों का उल्लेख
- ओवरहेड प्रोजेक्टर पर संक्षिप्त लेख | ओवरहेड प्रोजेक्टर का उपयोग | ओवरहेड प्रोजेक्टर की सीमायें
- आगमन विधि का अर्थ | निगमन पद्धति का अर्थ | आगमन विधि तथा निगमन पद्धति के गुण एवं दोष
- शिक्षा का अर्थ | शिक्षा की प्रमुख परिभाषाएँ | शिक्षा की विशेषताएँ | Meaning of education in Hindi | Key definitions of education in Hindi | Characteristics of education in Hindi
- शिक्षा की अवधारणा | भारतीय शिक्षा की अवधारणा | Concept of education in Hindi | Concept of Indian education in Hindi
- शिक्षा के प्रकार | औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा | औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में अन्तर
- शिक्षा के अंग अथवा घटक | Parts or components of education in Hindi
- शिक्षा के विभिन्न प्रकार | शिक्षा के प्रकार या रूप | Different types of education in Hindi | Types or forms of education in Hindi
- निरौपचारिक शिक्षा का अर्थ तथा परिभाषा | निरौपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ | निरौपचारिक शिक्षा के उद्देश्य
- शिक्षा के प्रमुख कार्य | शिक्षा के राष्ट्रीय जीवन में क्या कार्य | Major functions of education in human life in Hindi | What work in the national life of education in Hindi
- वर्धा बुनियादी शिक्षा | वर्धा बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत | बुनियादी शिक्षा के उद्देश्य | वर्धा शिक्षा योजना के गुण - दोष

- राज्य के शैक्षिक कार्यों का वर्णन | शैक्षिक अभिकरण के रूप में राज्य के कार्यों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्य | शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्यों का वर्णन कीजिये
- विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपाय | विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपायों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में परिवार के कार्य | Family functions as an educational agency in Hindi
- नवाचार का अर्थ | नवाचारों को लाने में शिक्षा की भूमिका | नवाचार की विशेषतायें
- नवाचार के मार्ग में अवरोध तत्व | शिक्षा में 'नवीन प्रवृत्तियों (नवाचार) के मार्ग में अवरोध तत्वों' का वर्णन
- दर्शन का अर्थ | दर्शन की परिभाषाएं | दर्शन का अध्ययन क्षेत्र
- गांधी जी का शिक्षा दर्शन - आदर्शवाद, प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद का समन्वय है।
- शिक्षा में महात्मा गाँधी का योगदान या शैक्षिक विचार | गाँधीजी के शिक्षा दर्शन से आप क्या समझते हैं?
- विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन शिक्षाशास्त्री के रूप में | विवकानन्द के अनुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियां
- मानव निर्माण शिक्षा में स्वामी विवेकानन्द का योगदान | मानव निर्माण शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य
- आदर्शवाद में शिक्षा के उद्देश्य | आदर्शवाद में शिक्षा के सम्प्रत्यय
- जॉन डीवी के प्रयोजनवादी शिक्षा | जॉन डीवी की प्रयोजनवादी शिक्षा का अर्थ
- रूसो की निषेधात्मक शिक्षा | निषेधात्मक शिक्षा क्या है रूसो के शब्दों में बताइये
- आदर्शवाद की परिभाषा | आदर्शवाद के मूल सिद्धान्त
- सुकरात का शिक्षा दर्शन | सुकरात की शिक्षण पद्धति
- प्रकृतिवाद में रूसो एवं टैगोर का योगदान | प्रकृतिवाद में रूसो का योगदान | प्रकृतिवाद में टैगोर का योगदान
- प्रकृतिवाद क्या है | प्रकृतिवादी शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ | प्रकृतिवादी पाठ्यक्रम के सामान्य तत्व
- प्रकृतिवाद में रूसो का योगदांन | रूसो की प्रकृतिवादी विचारधारा
- प्रयोजनवाद का अर्थ | प्रयोजनवाद दर्शन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन
- प्रयोजनवाद के शिक्षा के उद्देश्य | प्रयोजनवाद तथा शिक्षण-विधियाँ | प्रयोजनवाद के अनुसार शिक्षा-पाठ्यक्रम
- प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद मे तुलना | प्रकृतिवादी दर्शन की विशेषताएँ | प्रयोजनवाद की विशेषताएं
- आधुनिक शिक्षा पर प्रयोजनवाद के प्रभाव का उल्लेख
- आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद का प्रभाव | आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद क्या प्रभाव पड़ा
- प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम के सिद्धान्त | प्रयोजनवादी पाठ्यक्रम पर संक्षिप्त लेख | प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का वर्णन
- ओशो का शैक्षिक योगदान | ओशो के शैक्षिक योगदान पर संक्षिप्त लेख
- फ्रेरा का शिक्षा दर्शन | फ्रेरा का शैक्षिक आदर्श | Frara's education philosophy in hindi | Frara's educational ideal in hindi
- इवान इर्लिच का जीवन परिचय | इर्लिच का शैक्षिक योगदान | Ivan Irlich's life introduction in hindi | Irlich's educational contribution in hindi
- जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य | जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के कार्य
- जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचार | जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचारों का वर्णन
- राष्ट्रीय एकता व भावात्मक एकता का सम्बन्ध | भारत में राष्ट्रीय एकता का संकट | निवारण हेतु कोठारी आयोग के सुझाव

- राष्ट्रीय एकता के मार्ग में मुख्य बाधाएं | शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय एकता की बाधाओं को दूर करने के उपाय
- मूल्य शिक्षा के विकास में परिवार की भूमिका का वर्णन | Describe the role of family in the development of value education in Hindi
- मूल्य शिक्षा का अर्थ | मूल्य शिक्षा की आवश्यकता | मूल्य शिक्षा की अवधारणा
- भावनात्मक एकता के विकास में शिक्षा किस प्रकार सहायक हो सकती है? | बच्चों को भावनात्मक एकता के लिए शिक्षा देना क्यों आवश्यक है?
- पर्यावरण शिक्षा का अर्थ | पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य | पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम
- भावात्मक एकता के लिए भावात्मक एकता समिति द्वारा दिये गये सुझावों का वर्णन कीजिए।
- राष्ट्रीय एकता का अर्थ | राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति के लिए उपाय | राष्ट्रीय एकीकरण में शिक्षक की भूमिका
- भावात्मक एकता का अर्थ | भावात्मक एकता के स्तर | भावात्मक एकता के विकास में शिक्षा के कार्य | राष्ट्रीय एकता भावात्मक एकता के सम्बन्ध